ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 274-276

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

# आधुनिक परिवेश में लोक चित्रों का अध्ययन

1. ईशा
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-15.12.2023, Revised-21.12.2023, Accepted-27.12.2023 E-mail: raniisha206@gmail.com

***सारांशः*** ***जैसा कि सर्व विदित है, लोक कला एक ऐसी परम्परा कला के रूप में स्थित है, जिसकी जड़े हमारी संस्कृति से जुड़ी है। यह आदिकाल से मानव सभ्यता का अभिन्न अंग रही है। इसकी सृजनशीलता एवं उत्पत्ति सामूहिक रूप से व्याप्त है तथा लोक जीवन में कला अपने मूल स्वरूप में ही उपस्थित रहती है। वह जीवन के रहन–सहन रीति –रिवाज एवं विश्वासों पर आधारित होती है। यह कलाएं मात्र मनोरंजन एवं साज सज्जा पर आधारित नहीं होती, बल्कि धार्मिक एवं अध्यात्मिक अनुष्ठानों का अभिन्न अंग एंव परिणाम होती है। जन सामान्य लोक कला का प्रयोग अपने जीवन को सौंदर्य युक्त करने तथा अपनी मान्यताओं एवं विश्वासों के आधार पर सुख व शान्तिमय जीवन प्राप्त करने के लिए तथा पारलौकिक अनुग्रह प्राप्त करने के लिए लोक कला का सम्पादन करते हैं, लोक चित्र कला का प्रभाव राष्ट्रीय ही नहीं, अपितु अन्तराष्ट्रीय कला जगत पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अतः सम्पूर्ण विश्व में आज लोक चित्र कला के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ता जा रहा है जिसका प्रभाव हम आधुनिक परिवेश में अनेक प्रकार से कपड़ों व आभूषणों में देखते हैं आज के परिवेश में कपड़ों व आभूषणों पर लोक चित्रों का दौर अधिक प्रचलित है, लोक चित्रों के प्रति बढ़ती प्रसिद्धि को देखकर मन में लोक चित्रों के प्रति एक रूपरेखा का निर्माण हुआ तथा मन प्रफुल्लित हुआ कि आज भी हमारी लोक परम्परा चित्र शैली जनों के बीच अपना स्थान लिए है।***

***कुंजीभूत शब्द– लोक चित्र, आधुनिक परिवेश, लोक कला, परम्परा, आदिकाल, सृजनशीलता, सामूहिक रूप, रीति –रिवाज।***

लोक कला का अध्ययन गत शताब्दी से ही आरम्भ हुआ है, इससे पूर्व इस कला की ओर किसी का ध्यान भी नहीं गया था। जब से इसका अध्ययन आरम्भ हुआ है। इसकी सीमाओं और परिभाषा के सम्बन्ध में विद्वानों में यथेष्ट मतभेद रहा है फिर भी इतना स्पष्ट है कि लोक कला मानव सभ्यता के विकास के इतिहास में एक और आदिम कला और दूसरी और सुसंस्कृत कला के मध्य स्थित रही है। लोक कला की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि यह एक अलग वातावरण में प्राचीन परम्पराओं को रखने वाली कला है। इस वातावरण का प्रभाव आकृतियां शैली उपकरणों धार्मिक क्रियाओं और मनोरंजन के साधनों का जन्म, विवाह आदि संस्कारों तथा फसल के उत्सवों आदि में विकसित होता दिखाई देता है। समस्त कलाएं मनुष्य की सौंदर्य वृत्ति का परिणाम है। अपने चारों ओर के वातारण से प्रेरित होकर मनुष्य में जो सौंदर्य धारणा उत्पन्न होती है। वही कलाओं में प्रति फलित होती है। लोक शब्द संस्कृत के लोक दर्शन धातु से निर्मित है, अर्थात लोक शब्द का अर्थ है सम्पूर्ण जन समुदाय जो किसी भी देश में निवास करता है। उसे लोक शब्द से सम्बोधित किया जाता है। लोक शब्द उस सामान्य जन परिवेश को इंगित करता है जो लोग इस शब्द की परिधि में आते हैं। भारत के लोक कलाएं अनेकानेक संस्कारों धार्मिक अनुष्ठानों उत्सवों इत्यादि की सहज अभिव्यक्ति है। इस अवसर पर भूमि अथवा भित्तियों पर मांगलिक प्रतिकों का चित्रण किया जाता है। इस चित्रण के लिए सामान्य जन पिसा हुआ चावल, गेहूं का आटा, हल्दी, सुखे व गीले रंग इत्यादि का प्रयोग करते हैं। शंख, सूर्य, चन्द्र, स्वास्तिक, मछली, हाथी इत्यादि का चित्रण किया जाता है। अन्य देशों में भी वहां के रीति– रिवाजों व परम्परा के अनुसार लोक चित्र बनाए जाते हैं।

**आधुनिक परिवेश में लोक चित्रों में रूचि का विकास–** लोक कला के अध्ययन हेतु हमें लोक कहे जाने वाले अर्ध–शिक्षित ग्रामीण समुदाय के अतिरिक्त नगरों में बसने वाले उस समुदाय को भी सम्मिलित कर लेना चाहिए, जिसकी विचारधारा वैसी ही हो। हमें कुछ ऐसी कलाकृतियां मिल जायेगी, जो पूर्ण रूप से लोक कलाकृतियां ने होकर लोक कला जैसी होती है। अन्तिम युग की बाइजेंटाइन कला तथा भारतीय अपभ्रंश चित्र शैली इसी प्रकार की है, इनमें जितना अंश लोक कला के समान है उसका निर्णय पृथक–पृथक कृतियों के आधार पर करना चाहिए। निश्चित रूप से लोक कला में सम्मिलित की जाने वाली कृतियां इनमें बहुत कम ही है। लोक चित्रकला में उपयोगी और ललित जैसा कोई भेद नहीं होता, वहां तो भोजन पकाने की हांडी तक कलाकृति मानी जाती है वास्तव में, लोक– मस्तिष्क का संगठन कुछ ऐसा है कि वहां अभी उपयोगी और ललित जैसा कोई भेद प्रस्तुत नहीं हुआ है। वह अपनी प्रतिभा से दैनिक उपयोग की वस्तुओं को ही सुन्दर रूप देने का प्रयत्न करता है। लोक चित्रों के प्रति समाज की रूचि बढ़ने लगी और लोग दैनिक प्रयोग की वस्तुओं को लोक कला के अनुकरण पर बनाने लगे। लोगों में लोक कला जैसी वस्तुओं की नकल का फैशन बढ़ रहा है तथा व्यापारिक लाभ के लिए लोक चित्रों की अंधाधुंध नकल हो रही है, जिससे लोक चित्रों को काफी प्रसिद्धि मिल रही है। समय

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

साथ–साथ यदि देखा जाये, तो लोक चित्रों को हर क्षेत्र में प्रयोग कर अपने व्यापार को उच्च स्तर पर स्थापित कर रहे हैं। आज की परिवेश में लोग लोक चित्रों का प्रयोग कपड़ों तथा आभूषणों में करते हैं। कपड़ों पर कई तरह के अध्यात्मिक प्रतीक चिन्ह, भगवान जी के चित्रों को बनाकर वस्त्र की साज सज्जा को बढ़ाते हैं, साथ ही आभूषणों में भी अध्यात्मिक व अन्य प्रतीक चिन्हों का प्रयोग कर लोक चित्रों को बढ़ावा व प्रसिद्धि हासिल हो रही है, जिसको देखकर जनों में संस्कृति के प्रति लगाव उत्पन्न होता है तथा वह लोक कला का ज्ञान भी अर्जित कर रहे हैं, जिससे हमारी प्राचीन परम्परा को भी बढ़ावा मिल रहा है और आने वाली नई पीढ़ी में भी हमारी प्राचीन परम्पराओं का विकास तेजी से हो रहा है। आधुनिक समय में भिन्न–भिन्न वस्तुओं पर लोक चित्रों का रूझान अत्याधिक देखने को मिलता है।

**विभिन्न देशों की लोक कला–** समस्त विश्व की सम्पूर्ण लोक कला का अवलोकन किसी भी प्रकार सम्भव नहीं है। अतः केवल उपलब्ध उदाहरणों के आधार पर विभिन्न देशों की लोक कला का थोड़ा बहुत परिचय प्राप्त होता है। कुछ वस्तुएं सारे संसार की लोक कला में उपलब्ध होती है, जैसे– स्थापत्य, वस्त्र, आभूषण, फर्नीचर, वाद्य यन्त्र, खिलौनें, औजार, पात्र, वाहन एवं मनोरंजन के उपकरण आदि। कुछ देशों की लोक चित्र कलाओं का वर्णन निम्नलिखित है :

**नीदरलैण्ड–** यहाँ पर कपड़ों तथा पात्रों की कला विशेष प्रसिद्ध है। श्वेत भूमि पर नीले अथवा बैंगनी रंग से चित्रकारी की जाती है। टाइलों पर अनेक प्रकार के बेल–बुटे एवं सुन्दर ज्यामितिय आकृति अंकित की जाती है। इस प्रकार की कला को यहां पर विशेष महत्व दिया जाता है। यह कला यहां की लोक चित्र शैली के रूप में विशेष प्रसिद्ध है।

**जर्मनी–** यहां पर पात्र कला विशेष विख्यात है और आज भी रंगीन खिलौने, जग, चित्रित प्लेट निर्मित होती है, जिन पर बाईबिल, प्रकृति, लोक जीवन तथा ज्यामितिय आधार पर कल्पित अभिप्राय का प्रयोग होता है। टैक्सटाईल डिजाईनों में चित्रात्मक एवं ज्यामितिय रूपों का व्यापक प्रचार है। जर्मनी के खिलौने संसार प्रसिद्ध हैं।

**स्विटजरलैण्ड–** यहां पर प्रायः सभी यूरोपीय देशों की कला के उदाहरण उपलब्ध होती है। अतः इसे अंतराष्ट्रीय कला भी कहा जाता है। यहां पात्र कला व फर्नीचर की कला विशेष प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त मुखौटे, वस्त्र, कांच की चित्रकारी दर्शनीय है। यहां लेस तथा एम्ब्रॉयडरी का कार्य भी होता है।

**हंगरी–** हंगरी की प्राचीन कला बहुत सुरक्षित है। यहां के परम्परागत रूपों में फूलों के अभिप्राय की प्रमुखता है जिनमें कहीं कहीं पक्षी भी अंकित किये जाते हैं। हंगरी की पात्र कला बहुत लोकप्रिय रही जिनमें पानी के पात्रों तथा शराब की सुराहियों में इस कला की चरम उन्नति हुई जिसमें पशु पक्षियों तथा पुष्पों की आकृतियां अंकित की जाती थी। भेड़ की खाल के वस्त्र पर चमड़ें की आकृतियां काट–काट कर लगाने की यहां बहुत प्रथा है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

**यूनान–** किसी समय यह देश पूर्व और पश्चिम की सांस्कृतियों का संगम स्थल था। अतः यहां भी अनेक सभ्यताओं का प्रभाव दिखाई देता है यहां की लोक मूर्तियों में पूर्वी प्रभाव अधिक है। यहां टैक्सटाईल कलाएं अधिक प्रचलित हैं, जिनमें अधिक परिश्रम से कलाकृतियां बनाई जाती हैं। प्रायः बुनाई, लेस आदि अधिक प्रचलित हैं। दैनिक प्रयोग की वस्तुओं में ज्यामितियां आकृतियां अधिक अंकित की जाती हैं।

**लोक चित्र शैली से प्रभावित आधुनिक चित्रकार–** लोक चित्र शैली से प्रभावित अनेकों चित्रकारों ने लोक चित्र शैली को एक नया आयाम प्रदान कर जनसमुदाय में इसका ज्ञान और रूचि पैदा की जिसमें यामिनी रॉय का नाम प्रथम स्थान पर आता है। इन्होंने चित्र शैली को लेकर निरन्तर प्रयोग और साधना करते हुए एक नया आयाम प्रस्तुत किया गया जिसमें इस कला को आधुनिक कला समीक्षकों की दृष्टि में महत्वपूर्ण सिद्ध किया गया है, जो कला सफल रूप से आज हमारे देश–विदेश में समान रूप से लागू है और वह ऐसे ही एक मात्र भारतीय कलाकार है। सबसे अधिक ज्ञान और समझ में आने वाली यामिनी रॉय की कला की कल्पना की उडान, विषय के मूल तत्वों और सर्जन प्रतिभा की विशेषता यह तत्व इनमें विद्यमान है। यामिनी रॉय के बाद प्रमुख नाम शीला ऑडेन का आता है वह प्रायः लन्दन में रहती थी। बंगाल की लोक कलाओं अल्पना, कांथा, पट, खिलौने, गुड़िया, कुण्डली आदि के सभी तत्वों को उन्होंने यामिनी रॉय के निर्देशन में स्थापित करने का प्रयास किया। अमृता शेरगिल के बाद महिला कलाकारों में उन्हीं का नाम आता है। अपनी परम्परागत लोक कलाओं की समृद्धि का अनुकरण करने में बंगाल के पश्चात आंध्रप्रदेश के कलाकारों का नाम आता है। उनकी कृतियों में कल्पना तथा अंतर्दृष्टि का सुन्दर समन्वय है। 19वी0 शताब्दी में आंध्र प्रदेश में कांच के ऊपर सुन्दर चित्रकारी का व्यापक प्रचलन हुआ है। इस प्रकार आंध्रप्रदेश की लोक कला में वहां के आधुनिक चित्रकारों पर निर्णायक प्रभाव डाला है। इनमें ए. पैडीराजू प्रमुख है इन पर विजय नगर, लेपाक्षी देवाल्य के लोक कलाकारों का प्रभाव है। आंध्र प्रदेश के अन्य चित्रकारों में एम. कृष्णमूर्ति, श्रीमती पिल्का, विजय लक्ष्मी आदि विशेष उल्लेखनीय है। हैदराबाद के प्रसिद्ध लोक कलाकारों में, के. राज विशेष उल्लेखनीय हैं मकबूल फिदा हुसैन यद्यपि उत्तर प्रभाववादी कला शैली से अनुप्रेरित हैं तथा उनके प्रमुख चित्र लोक कला की सहजता, भावुकता, सादगी से प्रभावित है उन्होंने लोक चित्र शैली की रक्षा करते हुए नितांत मौलिक विधि से लकड़ी के खिलौने भी निर्मित किए हैं। लोक परम्पराओं का अनुकरण करने वाले अन्य आधुनिक भारतीय चित्रकारों में देवयानी कृष्ण, अवनीसेन तथा बद्री नारायण के नाम भी उल्लेखनीय है। यह समस्त कलाकार भारतीय कला को ऐसी लोक भूमि पर स्थित करने का प्रयत्न किया, जहां राष्ट्रीयता एवं मौलिकता विकसित हो सके और उसे यूरोप का मुंह न ताकना पड़े।

**निष्कर्ष–** उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि समय के साथ–साथ लोक चित्रों के प्रति लोगों का रूझान बढ़ा है लोक चित्रकला पर पहले कई चित्रकार हुए, जिन्होंने अपने प्रयासों से लोक चित्र शैली को नया आयाम प्रदान किया, जिससे आधुनिक परिवेश में लोगों ने इस नए आयाम को अपनाया तथा आज के दौर में लोगों ने कपड़ों, आभूषणों, फर्नीचर, दीवारों पर लोक चित्रों को बनाकर उनकी साज सज्जा में चार चांद लगा दिए हैं, जिनकों देखकर अन्य जनों में भी लोक चित्र शैली के प्रति रूझान उत्पन्न हुआ है। साथ ही आने वाली पीढ़ी को लोक चित्रों या संस्कृति के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है क्योंकि आधुनिक युग फैशन का दौर है। इसमें नई पीढ़ी को अधिकतर क्रियात्मक वस्तुओं के प्रति रूचि होती है जो लोक चित्रों से उनके फैशन में क्रियात्मकता के साथ–साथ लोक परम्परा को भी बढ़ावा मिल रहा है। इससे स्पस्ट होता है कि आने वाले समय में भी हमारी लोक परम्परा के चित्र आने वाली पीढ़ियों में अपना स्थान ऐसे ही बनाए रखेगें।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, अरूण, लोक चित्रकला, प्रकाशन– लेख श्री पब्लिकेशन, शाहदरा दिल्ली–110093,
2. कला निबन्ध, "अशोक", प्रकाशन–अशोक प्रकाशन मंदिर अलीगढ़।
3. गोस्वामी, डॉ0 प्रेमचंद, भारतीय कला के विविध स्वरूप, प्रकाशन– पंचशील फिल्म कॉलोनी जयपुर, संस्करण–1997.
4. अग्रवाल, डा0 गिर्राज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, प्रकाशन– संजय पब्लिकेशन शैक्षिक पुस्तक आगरा, संस्करण–2002.
5. चित्र – गुगल सर्च इंजन।

*****